शुल्क १५ वर्ष
२१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १८ : अंक ३७ : नई दिल्ली : १६-२२ दिसम्बर २०१२

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण तथा महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा आदि श्रमणी बाड़मेर संभाग में विचरण करते हुए फलसूंड पधार गए हैं। पूज्यप्रवर २७ दिसम्बर को बाड़मेर सिटी पधार जाएंगे। यात्रा अत्यन्त उत्साहपूर्ण वातावरण में गतिमान है। बड़ी संख्या में लोग आचार्यप्रवर के साथ यात्रा में हैं। पूज्यप्रवर ५-१० जनवरी तक बायतू और १५-१६ जनवरी को बालोतरा विराजेंगे। दर्शन-उपासना हेतु आने वाले लोग निकटवर्ती स्टेशन बालोतरा पहुंचें। यहां से बाड़मेर के विभिन्न गांवों और कस्बों के लिए बसें और टैक्सियां हर समय उपलब्ध हैं।

जिज्ञासा आपकी : समाधान पूज्यप्रवर का-२

प्रश्न :-जैन धर्म में किसी को कष्ट देने को हिंसा कहा गया है। साधु केशलोच करता है, क्या वह अपने प्रति हिंसा नहीं है?

उत्तर :-मुझे यह बताएं कि कोई मजदूर तपती धूप में कड़ी मेहनत करता है तो क्या वह अपने प्रति हिंसा नहीं है? एक व्यक्ति गरीबों की सेवा के लिए भागदौड़ करता है तो क्या वह हिंसा नहीं है? हिंसा में यह देखना होता है कि आदमी का लक्ष्य क्या है? दृष्टिकोण क्या है? कोई आदमी तपस्या करे, अठाई की, सोलह की तो क्या इसे हिंसा कहा जाएगा? इस प्रकार हिंसा की बात को समझना अपेक्षित है कि हिंसा में राग-द्वेष की भावना है या आत्मकल्याण की भावना है? द्वेष की भावना से कोई काम करे तो मान लें कि उसमें हिंसा हो सकती है, पर जो अपनी साधना के लिए, कर्म निर्जरा के लिए करे, सहिष्णुता का विकास करने के लिए करे तो उसको हिंसा कैसे माना जा सकता है?

प्रश्न :-क्या हर जीव का अन्तिम भव पहले से ही तय होता है अथवा करनी के अनुसार बदल सकता है? यदि नहीं तो मरीचि के जीव को इतने भवों पहले भगवान ने अन्तिम तीर्थंकर होना कैसे बताया? यदि हां, तो क्या हर भव के साथ जीव के लिए करनी भी निश्चित होती है?

उत्तर :-तीर्थंकर सर्वज्ञ होते हैं। वे तो अनंतकाल के भविष्य को भी जान लेते हैं। कौन-सा प्राणी कब मोक्ष में जाएगा, मेरे खयाल से यह बात तीर्थंकरों से छिपी नहीं रहती। भगवान ऋषभ तो सर्वज्ञ थे। उन्होंने जान लिया कि यह जीव अमुक समय में तीर्थंकर बनेगा, मोक्ष में जाएगा। जो भी होना है तीर्थंकरों के द्वारा वह अज्ञात नहीं है, ऐसा हमें लगता है। हमारे अल्पज्ञान में भले ही लगे कि ऐसा कैसे हो गया या होना ऐसा था, फिर वैसा कैसे हो गया, पर आखिर क्या होगा, इसे तीर्थंकर जानते हैं। जैसे मान लीजिए एक आदमी को बचपन में दीक्षा लेने की भावना थी, बाद में फिर भावना नहीं रही, कुछ दिन बाद फिर भावना हो गई। इस प्रकार भावनाओं में आए बार-बार बदलाव के बाद अन्ततः उसने दीक्षा ले ली तो सामान्य आदमी सोचेगा कि इसकी भावना में बार-बार उतार-चढ़ाव आता रहा, यह क्या दीक्षा लेगा? लेकिन तीर्थंकर जांन लेंगे कि भले ही उसकी भावना बीच-बीच में घटेगी-बढ़ेगी, लेकिन आखिर में इसकी भावना बलवंती हो जाएगी और यह साधु बन जाएगा, दूसरों का कल्याण करेगा। इस बात को सामान्य आदमी नहीं जान पाता, पर सर्वज्ञ तीर्थंकर जान लेते हैं।

प्रश्न :-जैसा कि गुरुदेव ने फरमाया--केवलज्ञानी भविष्य की सब बातें बता सकते हैं तो क्या सब भाव पहले से नियत हैं? यदि पहले से ही नियत हैं तो पुरुषार्थ का क्या महत्त्व है? क्या पुरुषार्थ भी पहले से नियत है?

उत्तर :-केवलज्ञानी तो हर द्रव्य, पर्याय, हर स्थिति को जान लेते हैं। अब रही बात पुरुषार्थ की तो पुरुषार्थ भी नियत है कि आदमी पुरुषार्थ करेगा। यह भी नियत है कि आदमी के मन में पुरुषार्थ करने का भाव आएगा। परन्तु इतना-सा ध्यातव्य है कि सत्पुरुषार्थ को कभी छोड़ना नहीं चाहिए। आगे भाव नियत हैं, इसलिए पुरुषार्थ की अपेक्षा नहीं, यह चिंतन नहीं करना चाहिए। पुरुषार्थ तो करना ही है। पुरुषार्थवाद को कायम रखते हुए नियतिवाद को भी मान्य रखना चाहिए, यह सर्वोत्तम मार्ग प्रतीत हो रहा है।

प्रश्न :-क्या मांसाहारी अणुव्रती बन सकता है?

उत्तर :-अणुव्रत की जो ग्यारह नियमों वाली आचारसंहिता है, उसे कोई स्वीकार करना चाहे तो उसे मांसाहार से मुक्त होना होगा। लेकिन अगर कोई मांसाहार नहीं छोड़ सकता और अन्य नियमों को पालने के लिए तैयार है तो वह ग्यारह नियमों वाली आचारसंहिता का अणुव्रती न बनकर प्रवेशक अणुव्रती के रूप में एक अलग केटेगरी में अणुव्रती बन सकता है।

प्रश्न :- आपकी सहज मुस्कान का राज क्या है?

उत्तर :- कभी मुस्कान, कभी गंभीरता तो कभी अन्य भाव भी आ सकते हैं, आखिर छद्मस्थ हैं। चिंतन करें और देखें तो पाएंगे कि मुस्कान ऐसी चीज है कि कोई आदमी सामने आए और उसकी ओर देखकर पवित्र मुस्कान बिखेर दें तो उस मुस्कान से उसे थोड़ा पोषण मिल जाता है। उससे कोई बात करें या न करें, उस मुस्कान से आने वाले को सुख और संतोष मिलता है और हमें भी शुभ प्रवृत्ति में रहने का मौका मिलता है। किसी को हमारी मुस्कान से शान्ति मिलती हो, आनंद मिलता हो तो हमें मुस्कान देने में कंजूसी क्यों करनी चाहिए?

प्रश्न :-कोई-कोई आदमी भैरूंजी की भक्ति करता है और साथ में भिक्षु स्वामी की भी भक्ति करता है। यह होना चाहिए या नहीं?

उत्तर :-इस बारे में मेरा चिंतन है कि भिक्षु स्वामी का नाम तो किसी के साथ ले लो। भैरूंजी की भक्ति करने से पहले ले लो, बाद में ले लो, दिन में ले लो, रात में ले लो, कभी भी ले लो। उनकी स्तुति कर लो, उनके गीत गा लो, भक्ति कर लो, अच्छा है। अगर वास्तव में अध्यात्म की भावना और आत्मकल्याण की भावना है तो भिक्षुस्वामी की स्तुति तो कभी भी कर लो। किसी प्रोग्राम में कर लो, किसी स्थिति में कर लो, अच्छी बात है। ज्यादा अच्छी बात है कि अध्यात्म की दृष्टि से भिक्षु स्वामी का नाम लें। भावना जितनी आध्यात्मिक होगी, उतनी ही अच्छी बात है। भैरूंजी आदि के साथ में भिक्षु स्वामी की स्तुति कोई करता है तो हमारी ओर से इसमें कोई आपत्ति नहीं है।

प्रश्न :-मैं बी.कॉम का विद्यार्थी हूं। यदा-कदा आपके दर्शन व प्रवचन का लाभ भी लेता हूं। आचार्य महाप्रज्ञ के प्रवचन की सीडी में सुना कि व्यक्ति को सकारात्मक चिंतन रखना चाहिए। मेरे जीवन में काफी उतार-चढ़ाव आ रहे हैं, इसलिए मैं चाह कर भी सकारात्मक चिंतन नहीं रख पा रहा हूं। विपरीत परिस्थिति में भी चिंतन सकारात्मक रहे, नकारात्मक विचार न आएं, इसके लिए मार्गदर्शन प्रदान करें?

उत्तर :- इसके लिए चिंतन का परिष्कार करने का प्रयास करना चाहिए। उदाहरण के लिए मान लीजिए जीवन में कुछ कठिनाइयां आ गई हैं, ऐसे में मायूस और निराश हो जाएं कि अब क्या होगा? मैं कैसे, क्या कर पाऊंगा--इस तरह का चिंतन जीवन में हार मान लेने जैसा है। विपरीत परिस्थितियों में और कठिनाइयों में चिंतन यह हो कि मुझे निराश और हताश होने की जरूरत नहीं है। कठिनाइयों के पहाड़ को कैसे मैं चीर सकता हूं, इस पर मैं ध्यान दूं या इस संदर्भ में किसी से परामर्श करूं। मुझे कठिनाई के पहाड़ को चीरने का प्रयास करना चाहिए, न कि हताश और निराश होकर बैठना चाहिए। प्रकृति ने शायद मेरी परीक्षा लेने के लिए कठिनाइयों को भेजा होगा। मुझे तो इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने का प्रयास करना है। समय हमेशा एक-सा नहीं रहता। मैं अपने पुरुषार्थ से परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने का प्रयास करूं--इस प्रकार अपने चिंतन को प्रशस्त बनाने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में जो भी विपरीत परिस्थिति आएं,

उसका सम्यक समाधान करने का प्रयास करना चाहिए, न कि हताशा-निराशा में बैठ जाना चाहिए।

•

क्रमशः

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण टापरा की ओर

१ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पारस भवन से तिलवाड़ा की ओर प्रस्थित हुए। मार्गवर्ती ठाकुर नाहरसिंहजी और नरेन्द्रसिंहजी के घर पूज्यवर की चरणरज से पावन हुए। लगभग १३.०५ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर तिलवाड़ा पधारे। श्री चैनसिंह भाटी आदि ने पंचायत समिति की ओर से पूज्यवर का स्वागत किया। बताया गया कि तिलवाड़ा में प्रतिवर्ष राजस्थान का सबसे बड़ा पशु मेला लगता है। छाजेड़ परिवार की कुलदेवी भुवालमाता का प्राकट्यस्थल भी तिलवाड़ा है। बालोतरा, जसोल आदि पार्श्ववर्ती क्षेत्रों के छाजेड़ परिवार अपने आराध्य का स्वागत कर आह्लादित थे। तिलवाड़ा का मार्गवर्ती राजकीय माध्यमिक विद्यालय भी पूज्य चरणों से पावनता को प्राप्त हुआ। पूज्यवर ने भुवालमाता मन्दिर में मंगलपाठ का उच्चारण किया। आजका प्रवास छाजेड़ भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में छाजेड़ परिवार से संबद्ध मुनि जितेन्द्रकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। बाड़मेर जिला छाजेड़ परिवार मंडल के अध्यक्ष श्री नेमीचन्द छाजेड़, कार्यकारी अध्यक्ष श्री लूणचन्द छाजेड़, नाकोड़ा ट्रस्ट मंडल के अध्यक्ष श्री अमृतलाल छाजेड़, श्रीमती देवी छाजेड़,श्रीमती शशिकला छाजेड़ ने पूज्यचरणों में अपने भाव सुमन अर्पित किए। श्रीमती नयना छाजेड़ ने अपने भावोद्‌गार व्यक्त करते हुए महिला मंडल बालोतरा की ओर से भरवाए गए भ्रूणहत्या निषेध के संकल्पपत्र पूज्यचरणों में भेंट किए।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में आगम वर्णित कथानक के माध्यम से दुर्लभ मानव जीवन को साधना के द्वारा सफल बनाने की प्रेरणा प्रदान की।

निर्वाण प्राप्ति है सर्वोच्च लक्ष्य

२ दिसम्बर। प्रातः ११.०५ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग नं. ११२ पर स्थित 'बागुण्डी' गांव में पधारे। तिलवाड़ा से विहार करते समय युवा सरपंच श्रीमती अन्नपूर्णा भाटी व ग्रामीणजनों ने आचार्यवर को भावभीनी विदाई दी। मार्ग में सैनिक वाहनों का कानवॉय (काफिला) कतारबद्ध चल रहा था। पश्चिमी सीमान्त क्षेत्र होने से इस क्षेत्र में सैन्य हलचलें चलती रहती हैं। आज उसी मार्ग पर धर्म सैनिक चल रहे थे। रास्ते में राजस्थान के पूर्व जलदाय मंत्री श्री राजेन्द्र गहलोत, समदड़ी के सरपंच श्री बाबूलाल परिहार, बालोतरा नगरपालिका के चेयरमैन श्री महेश चौहान ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए।

राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपना मंगल प्रवचन करते हुए कहा--'भारतीय दार्शनिक विचारधारा में निर्वाण व मोक्ष को सिद्धान्त रूप में प्रस्तुत किया गया है। आत्मा का सर्वोच्च लक्ष्य निर्वाण प्राप्ति ही हो सकता है। संसार में बार-बार जन्म एवं मरण का चक्र चलता रहता है। अनंतानंत बार हम सबकी आत्मा जन्म-मरण कर चुकी है। प्राणियों का भव्य एवं अभव्य के रूप में दो विभाजन है। अभव्य जीव अनंतानंत भव कर चुके हैं और आगे भी अनंतानंत भव करेंगे। इस संसार चक्र से मुक्त होने का उन्हें मौका ही नहीं मिलेगा। ऐसे जीवों में मोक्ष प्राप्ति की अर्हता नहीं होती। जबकि भव्य जीव कर्ममुक्त हो सकते हैं। भव्य और अभव्य किसी ने बनाया नहीं है। यह तो जीव का पारिणामिक भाव है, नियति है। किसी में यह क्षमता नहीं है कि वह किसी अभव्य को भव्य और भव्य को अभव्य बना सके। जो संवरयुक्त निर्जरा कर लेता है, वह कर्ममुक्त हो सकता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'व्यक्ति की दृष्टि सम्यक् होनी चाहिए। उसके ज्ञानचक्षु उद्‌घाटित हों। दृष्टि ठीक नहीं है तो देखना कठिन हो जाता है। गुरु ज्ञानचक्षु के प्रदाता होते हैं। गुरु में समुचित साधना व

ज्ञान का विकास होना चाहिए। जिस गुरु के पास सम्यक् ज्ञान नहीं है, वह दूसरों को ज्ञान क्या देगा? उनका उद्धार कैसे कर सकेगा? गुरु सुपात्र शिष्य को ज्ञान देने का हरसंभव प्रयास करते हैं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

रात्रि में पूज्य आचार्यप्रवर ने अत्यन्त कृपा कर असाढ़ा निवासी मुमुक्षु जवेरीलाल जीरावला को २३ जनवरी २०१३ को असाढ़ा में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की।

बूंद-बूंद तप से तपःकुंभ को भरें

३ दिसम्बर। प्रातः लगभग ८.०५ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'खारापार' पधारे। यहां आपका प्रवास राजकीय माध्यमिक विद्यालय में हुआ। विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में स्थानीय सरपंच श्री लक्ष्मण चौधरी, जसोल प्रवास समिति के अध्यक्ष श्री गौतम सालेचा एवं प्रधानाध्यापक श्री धुड़ाराम ने अपने विचार रखे।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अध्यात्म की साधना में संवर और निर्जरा का महत्त्व है। संवर और निर्जरा के सिवाय दूसरी कोई साधना अध्यात्म के क्षेत्र में निर्दिष्ट नहीं है, ऐसा लग रहा है। निर्जरा वह तत्त्व है, जो हमारे भीतर के मल को धो डालता है। तपस्या आदि के द्वारा हमारे कर्म-मल समाप्त होते हैं और आत्मा निर्मलता को प्राप्त हो जाती है। जैसे साबुन से वस्त्र को प्रक्षालित कर स्वच्छ बनाया जा सकता है, वैसे ही हमारे चेतनारूपी वस्त्र को निर्जरारूपी साबुन से विशुद्ध बनाया जा सकता है।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने निर्जरा के बारह प्रकारों की विशद व्याख्या की और कहा--'संयमी की पदयात्रा भी तपस्या है। वह भी पवित्र उद्देश्य के साथ की जाती है। हमारे छोटे-छोटे संत भी अपना सामान लेकर पदयात्रा करते हैं। सामान्य आदमी के लिए अब चलना कठिन हो गया है। सहन करना भी एक प्रकार की तपस्या है। वचन-प्रहारों को सहना भी अच्छी तपस्या है। मनरूपी घोड़े की लगाम नियंत्रण में रहे। एक-एक, दो-दो रुपये डालते रहने से जैसे गुल्लक भर जाता है, वैसे ही बूंद-बूंद जलरूपी तपस्या से हमारा तपःकुंभ भर सकता है।' पूज्य आचार्यवर ने खारापार वासियों को नशामुक्त होने की प्रेरणा दी और स्कूली बच्चों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया। आज पूज्यप्रवर ने **स्व.श्रीमती रतनीदेवी बरमेचा** (धर्मपत्नी-श्री चम्पालालजी बरमेचा, तारानगर-कोलकाता) के सेवा भाव का उल्लेख करते हुए उन्हें **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

मगरा स्यूं झगड़ा करै सणंतरा रा धोर

४ दिसम्बर। साढ़े ६ किमी. का विहार कर आचार्यप्रवर 'सणंतरा' पधारे। थार मरुस्थल के उन्नत धोरों के मध्य आरोह-अवरोह के बीच बलखाती छोटी-सी सड़क से अहिंसा यात्रा का कारवां गुजर रहा था। वि.सं.१९२१ में अणुव्रत प्रवर्तक गुरुदेव तुलसी इस मार्ग से पधारे थे। उस समय सामान्यतया सड़कों का अभाव था। अनुमान लगाया जा सकता है कि घुमावदार संकरी पगडंडियों और रेतीले व भरूंट कांटों में गुरुदेव की वह यात्रा कितनी दुर्गम रही होगी। उस समय गुरुदेव ने इस क्षेत्र की स्थिति और अपनी यात्रा का चित्रण करते हुए सद्यः निर्मित तीन पद्य कहे थे--

चालन्ता थाक्या परा, खड़ा अडावा खेत।
तुलसी कदे न भूलसी, आ सणंतरा री रेत।।
मगरा स्यूं झगड़ा करै, सणंतरा रा धोर।
विद फागण इक्कीस में, तुलसी दीठो तोर।।
सणंतरा स्यूं बायतू, मंजिल कड़ी कमाल।
सेतां मत करज्यों सहल, रहणो रात विचाल।।

एक विशाल धोरे की तलहटी में मिलिट्री की एक टुकड़ी का विशाल कैम्प लगा हुआ था। धोरों में ठंड के मौसम में सैनिकों का प्रशिक्षण चल रहा था। इन दिनों प्रायः प्रतिदिन किसी न किसी रूप में सैन्य गतिविधियां इस संभाग में दिखाई दे जाती हैं। पाली व बालोतरा में बसे गोगड़ परिवार के इस मूल गांव में श्रद्धालुओं के पैतृक घरों में चरणस्पर्श करते हुए आचार्यवर राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। गांव के सभी वर्ग के लोगों में उल्लास दृष्टिगोचर हो रहा था।

विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में गोगड़ परिवार के नरेश, लक्ष्मण, गजेन्द्र व महिलाओं ने गीत प्रस्तुत किए। बालोतरा निवासी श्री नारायण गोगड़ ने अपने गांव में आराध्य का स्वागत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में अनेकानेक मित्र हो सकते हैं। वे साथ-साथ रहते हैं, अच्छी बातें करते हैं तो बेकार की बातें भी कर सकते हैं। व्यक्ति किसी को मित्र बनाने से पूर्व यह सोचे--यह व्यक्ति मित्रता के योग्य है या नहीं? अयोग्य मित्र उत्पथ की ओर ले जाने वाला हो सकता है। आचार्य महाप्रज्ञ किसी-किसी गृहस्थ को 'कल्याण मित्र' संबोधन दिया करते थे। यह शब्द महत्त्वपूर्ण है। यदि मित्र बनाना ही हो तो कल्याण में सहयोग करने वाले, भला चाहने वाले कल्याण मित्र को अपना मित्र बनाएं। समस्या से घिर जाने पर व कठिन स्थिति में कल्याण मित्र से संबल प्राप्त हो सकता है। कल्याण मित्र मिलना भाग्य की बात है, इसी तरह आचार्य को योग्य शिष्य की प्राप्ति होना आचार्य के सौभाग्य का प्रतीक होता है।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'सर्वोत्त्म बात यह है कि स्वयं को अपना मित्र बनाओ। जो धर्माचरण में संलीन रहता है, सदाचारी होता है, कदाचार में लिप्त नहीं होता, वह अपने आपका मित्र है। जो धोखेबाज है, हिंसा में लिप्त है, झगड़ा, कलह और नशा करता है, वह स्वयं का शत्रु है। मोहरूपी दैत्य हमारे चित्त को मूढ़ बना देता है। मूढ़ व्यक्ति अधम पथ का राही बन जाता है। यह अपेक्षित है कि व्यक्ति अहिंसा, संयम व प्रामाणिकता के मार्ग पर चले, सम्यक् आचरण करे। ऐसे व्यक्ति का कल्याण निश्चित है।' आचार्यवर ने आगे कहा--'गोगड़ परिवार सणंतरा गांव से जुड़ा है। साध्वी जयंतमालाजी की यह संसारपक्षीय पैतृक भूमि है। वे अपनी साधना में खूब विकास करे।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महत्त्वपूर्ण है वात्सल्य

५ दिसम्बर। आज प्रातः सणंतरा से लगभग ५ किमी. का विहार कर परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर उत्तरणी पधारे। जसोल निवासी सालेचा, भंसाली, चौपड़ा, तलेसरा, मांडोतर परिवार अपने पूर्वजों की कर्मभूमि में अपने आराध्य का स्वागत कर हर्षित थे। उत्तरणी में पूज्यप्रवर का प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में सालेचा परिवार और तलेसरा परिवार की महिलाओं ने पृथक-पृथक स्वागत गीत प्रस्तुत किए। श्रीमती चन्दा चोपड़ा, श्रीमती शोभा गोलेच्छा, कविता तलेसरा, लीला सालेचा, श्री मनोज तलेसरा, डा.केवलचन्द सालेचा, सुरेन्द्र सालेचा, बालिका मोनाली भंसाली, बालक आदित्य सालेचा आदि ने अपने आराध्य के स्वागत में भावाभिव्यक्ति की। मुनि विश्रुतकुमारजी ने अपने संसारपक्षीय पूर्वजों की कर्मभूमि पर भावोद्गार व्यक्त किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में 'वच्छल' शब्द प्राप्त होता है। इसका अर्थ है--वात्सल्य। सन्तान के लिए माता-पिता का वात्सल्य पोषक होता है। वात्सल्य की आत्मा है भीतर का स्नेहभाव। दुःखी व्यक्तियों के प्रति वात्सल्य का प्रयोग उन्हें राहत देने वाला हो सकता है। धार्मिक और लौकिक--दोनों संदर्भों में वात्सल्य का अपना महत्त्व है। गृहस्थ हो या साधु, जिस समाज में वात्सल्य का अभाव होता है, वह दुर्बल बन जाता है। वात्सल्य एक ऐसा तत्त्व है, जो एक-दूसरे को जोड़ने वाला, पुराने वैर-विरोध को तोड़ने वाला और जीवन को मोड़ने वाला बन सकता है।'

पूज्यवर ने आगे कहा--'वात्सल्य भाव के द्वारा पवित्र चित्तसमाधि प्रदान की जा सकती है। परिवार समाज की एक इकाई होती है। यदि परिवार में पवित्र वात्सल्य का अभाव होता है तो संबंधों में नीरसता आ सकती है। परिवार में दुर्भावना और वैमनस्य का भाव नहीं रहना चाहिए। व्यावसायिक आदि दृष्टियों से पृथक-पृथक रहना कोई बुरी बात नहीं, किन्तु परस्पर द्वेषभाव नहीं रहना चाहिए।'

उत्तरणी गांव के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने कहा--'आज हम उतरणी आए हैं। यह हमारे श्रावकों के पुरखों से संबद्ध गांव रहा है। जैसा बताया गया कि सालेचा, भंसाली, चौपड़ा, तलेसरा और मांडोतर परिवारों का संबंध इस धरती से रहा है। मुनि विश्रुतकुमारजी के संसारपक्षीय पूर्वजों से जुड़ा हुआ गांव है। मुनि विश्रुतजी उभरते हुए युवा संत हैं। इनमें प्रतिभा है, दिमाग है। हमारे अनेक कार्यों में लगे रहते हैं। जब ये छोटे से थे, तब गुरुदेव महाप्रज्ञजी ने इन्हें मेरे पास रखा। अब तो ये बड़े हो गए हैं। इन्होंने विकास किया है। ये चिंतनशील और तर्कशील हैं। संस्कृत का इनका अच्छा अध्ययन है, हिन्दी भाषा का भी अच्छा विकास है। हमारी मालेगांव, चालीसगांव आदि महाराष्ट्र के क्षेत्रों की यात्रा का वर्णन करते हुए इन्होंने और मुनि कीर्तिकुमार ने एक छोटी-सी पुस्तक लिखी थी। उसकी भाषा बहुत सुन्दर थी। मुनि विश्रुतजी काफी कार्य कर रहे हैं। गुरुदेव महाप्रज्ञजी के साधन संचालन में अनेकों के साथ इनका भी योगदान रहता था। विज्ञप्ति के कार्य में भी अनेकों में इनका बड़ा योगदान रहता है। हमारे धर्मसंघ में साधुओं के शिक्षा विभाग का दायित्व भी मैंने इन्हें सौंप रखा है। छोटे-मोटे अनेक कार्यों में जब-तब इन्हें झोंक देते हैं। मैं जब कभी ठिकाणे से बाहर जाता हूं, तो छाया की तरह ये प्रायः मेरे साथ रहते हैं। अच्छा कार्य करने वाले संत हैं। प्रतिभा में, अध्ययन में, कार्यों में, चिंतन में और सेवा में अच्छा विकास किया है और करते रहें।'

पूज्य आचार्यवर ने आगे कहा--'मुनि विश्रुतजी की संसारपक्षीय न्यातीली साध्वियां भी कई हैं। साध्वी उदितयशाजी अच्छी पढ़ी-लिखी, संस्कृत भाषा की जानकार साध्वी है। साध्वी मलयश्री और साध्वी संबुद्धयशा--दोनों मुनि विश्रुत की संसारपक्षीया सगी बहनें हैं। संबुद्धयशा पहले वर्षों तक समणी रही, जसोल में हमने उसे साध्वी बना दिया। दोनों साध्वियां बहुत अच्छी और शान्त स्वभाव की लगीं। साध्वी ख्यातयशा अभी नवदीक्षित है। यहां से जुड़े सभी साधु-साध्वियां खूब अच्छी साधना करें, खूब अच्छा विकास करें और खूब अच्छा काम करें। श्रावक-श्राविकाएं भी खूब धर्म-ध्यान की साधना और पवित्र सेवा करते रहें।'

पूज्यप्रवर ने आज साध्वी जयंतमालाजी के संसारपक्षीय पिता **श्री चम्पालाल गोगड़** तथा उनके भाई **श्री मोहनलाल गोगड़** को **'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'** के संबोधन से संबोधित किया।

मध्याह्न में पूज्यवर की पावन सन्निधि में साधु-साध्वियों की संगोष्ठी समायोजित हुई। पूज्यप्रवर ने अन्य प्रेरणा के साथ सन २००० के बाद दीक्षित साधु-साध्वियों को आचार्य भिक्षु द्वारा रचित 'अठारह पाप', 'दस दान' तथा श्रीमज्जयाचार्य द्वारा रचित 'गुणस्थान दिग्दर्शन', 'नियंठा दिग्दर्शन'--इन चार ढालों को सीखने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में आगामी ११ फरवरी २०१३ को परीक्षा समायोजित करने के लिए भी फरमाया।

गीड़ा में पावन पदार्पण

६ दिसम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः उत्तरणी से गीड़ा की ओर प्रस्थान किया। लगभग तीन किमी. का पथ विषम था। सघन बालू, मिट्टी और यत्र-तत्र बिखरे कंकरों से युक्त ऊबड़-खाबड़ पथ पूज्यचरणों को रोकने में असमर्थ था। कम आबादी वाला यह क्षेत्र सघन झाड़ियों और दूर-दूर तक दिखाई देने वाले ऊंचे-ऊंचे रेतीले टीलों के कारण किसी वन का अहसास करा रहा था। लगभग ८.०६ किमी. का विहार कर आचार्यवर ने गीड़ा गांव में प्रवेश किया। पूर्व सरपंच हनीफखां, थानेदार धन्नाराम आदि ने आचार्यवर की भावपूर्ण अगवानी की। अपनी पैतृक कर्मभूमि पर सालेचा परिवार ने पूज्यवर का भावभीना स्वागत किया। गीड़ा में आचार्यप्रवर का प्रवास ग्राम पंचायत भवन में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में पूर्व सरपंच हनीफखां, श्री प्रेमसिंह, महादेव मन्दिर के पुजारी श्री कालू भारती और श्री पुनराराम चौधरी ने आचार्यवर के स्वागत में अपने उद्‌गार व्यक्त किए। श्री जितेन्द्र सालेचा, श्रीमती जयश्री सालेचा, सुश्री प्रियंका सालेचा व बालक हार्दिक सालेचा ने अपने पूर्वजों की भूमि पर पूज्यवर की अभ्यर्थना की।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल उद्‌बोधन में उपस्थित जनता को उनके मन को सुमन बनाने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यवर ने गीड़ा से संबद्ध मुनि यशवंतकुमारजी का उल्लेख करते हुए उन्हें परोक्ष रूप में अच्छा विकास करने की पावन प्रेरणा प्रदान की।

सोहड़ा का सौभाग्य जगा

७ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर आज प्रातः गीड़ा से ४.०८ किमी. का विहार कर सोहड़ा पधारे। अपनी पैतृक कर्मभूमि पर आचार्यवर के पदार्पण से जसोल का बुरड़ परिवार और बालोतरा का गणधर चौपड़ा परिवार आह्लाद का अनुभव कर रहा था। सोहड़ा में आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में हुआ।

प्रातः प्रवचन से पूर्व आचार्यप्रवर बुरड़ और गणधर चौपड़ा परिवार के घरों में चरणस्पर्श हेतु पधारे। ऊंचे-ऊंचे रेतीले टीलों की गोद में बसे गांव के इन घरों के साथ अनेक अन्य ग्रामीणों के घर भी पूज्यचरणों के स्पर्श से पावन बने। गांव का शान्त वातावरण प्रकृति की रमणीयता को लिए हुए था। प्रातःकालीन कार्यक्रम में बुरड़ परिवार की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। श्रीमती पुष्पादेवी बी.बुरड़, श्रीमती पुष्पादेवी डी.बुरड़, श्री नेमीन्द बुरड़, दिनेश बुरड़, श्रीमती लता गणधर चौपड़ा, पिंकी गणधर चौपड़ा, बालिका दीक्षित बुरड़ ने श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए। मंत्री मुनिश्री का प्रेरक अभिभाषण हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'छद्‌मस्थ अवस्था में कभी किसी के साथ कटुतापूर्ण व्यवहार भी हो सकता है। उसकी विशुद्धि के लिए जैन शासन में खमतखामणा की सुन्दर व्यवस्था है। खमतखामणा मैत्री का एक प्रयोग है। साधक यह अनुभव करे कि सभी प्राणियों के प्रति मेरा मैत्रीभाव है। मैत्रीभाव जीवन में आ जाता है तो मानों एक बड़ी सम्पदा जीवन में आ जाती है। परिवार के सदस्यों में भी पारस्परिक मैत्रीपूर्ण व्यवहार रहना चाहिए। वात्सल्य, विनय, सम्मान, प्रेम आदि मैत्री के स्फुल्लिंग हैं। जीवन में मैत्री आ जाए तो व्यवहार के धरातल पर हम काफी उच्च बन सकते हैं।' सोहड़ा आगमन के संदर्भ में पूज्य आचार्यवर ने कहा--'आज हम सोहड़ा गांव आए हैं। बुरड़ और गणधर चौपड़ा परिवार का संबंध भी इस गांव से है। मुनि जिनेशकुमारजी बुरड़ परिवार से संबद्ध हैं। वे हमारे साथ नहीं आ सके। अच्छा काम करने वाले संत हैं। दक्षिण की लंबी और प्रभावशाली यात्रा करके आए हैं। तेरापंथ के संस्कारों से लोगों को जोड़ने का प्रयास करने वाले संत हैं। वे खूब अच्छा विकास और अच्छी सेवा करते रहें।' आचार्यप्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्त रहने का संकल्प करवाया।

भगवान महावीर से बढ़कर कोई नहीं

८ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर सोहड़ा से लगभग १२ किमी. का विहार कर 'हीरा की ढाणी' पधारे। सालेचा और बोकड़िया परिवार अपने पूर्वजों की कर्मभूमि पर पूज्यवर का स्वागत कर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। आचार्यवर का प्रवास राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में हुआ।

प्रातःकालीन कार्यक्रम में श्री गौतमचन्द सालेचा, श्री डूंगरचन्द सालेचा ने आचार्यवर के स्वागत में अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किए। बोकड़िया और सालेचा परिवार की महिलाओं ने गीत का संगान किया।

परमाराध्य आार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवन में कहा--'आज मृगशिर कृष्णा नवमी और दशमी है। मृगशिर

कृष्णा दशमी भगवान महावीर का दीक्षा दिवस है। भगवान महावीर को 'लोकोत्तम' कहा गया है। उनकी आत्मा ने पूर्वजन्मों में भी साधना और तपस्या की थी। उस आत्मा में करुणा और कर्तव्यनिष्ठा का भाव गर्भावस्था से ही देखने को मिलता है। बालावस्था से ही वे निर्भीक थे। भगवान महावीर जैसा महापुरुष भारत की भूमि पर पैदा हुआ, मानों यह भारत का सौभाग्य है। साधना की दृष्टि से भगवान महावीर से बढ़कर दूसरा कोई विकसित पुरुष मुझे नहीं लगता। ऐसे महापुरुष के प्रति मैं अपनी अभिवंदना और श्रद्धा अर्पित करता हूं। उनके स्मरण से हमारे भीतर भी पवित्र भावों का संचार होता रहे।' आचार्यवर ने प्रसंगवश जसोल चतुर्मास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री गौतमचन्द सालेचा और अध्यक्ष श्री जसराज बुरड़ की सेवाओं का उल्लेख किया। पूज्यप्रवर ने प्रवचन के उपरान्त आगामी यात्रा से संबद्ध अनेक घोषणाएं कीं। वे इसी विज्ञप्ति में प्रकाशित हैं। पूज्य आचार्यवर ने कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प भी करवाया।

जैसलमेर जिले में तेरापंथ अधिशास्ता का प्रथम पदार्पण

६ दिसम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर लगभग १४.०५ किमी. का विहार कर 'फलसूण्ड' पधारे। हीरा की ढाणी से निकलते ही लगभग ३ किमी. तक रेतीले मार्ग से विहार हुआ। कई जगह तो पैर बालू में धंस रहे थे। गांव के मुख्य मार्ग से जुलूस के प्रारंभ होने से विहार दो किमी. अतिरिक्त हो गया। लगभग चार-पांच किमी. दूर तक नगर के लोग बड़ी संख्या में पूज्यवर की अगवानी में आए। मात्र पैंतीस तेरापंथी जैन परिवारों वाले इस कस्बे में प्राप्त जानकारी के अनुसार लगभग छह हजार लोगों का सामने आना, जुलूस में शामिल होना और प्रवचन श्रवण करना इस बात का द्योतक था कि समाज की छत्तीस कौमों में आचार्यवर के आगमन को लेकर कितना उत्साह मूर्तिमान हो रहा था। विशाल उपस्थिति को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानों चातुर्मासिक प्रवेश पर होने वाली भीड़ हो। जनमानस में उमंगमय वातावरण था। सुव्यवस्थित जुलूस के साथ आचार्यप्रवर प्रवास स्थल जसराज तातेड़ के आवास पर पधारे। जैसलमेर जिले में तेरापंथ के आचार्य का यह प्रथम पदार्पण था। फलसूण्ड जैसलमेर जिले की पोकरण तहसील के अन्तर्गत है। पूज्यवर का चार दिवसीय प्रवास श्री जसराज तातेड़ के मकान में रहा। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर संपूर्ण तातेड़ परिवार कृतकृत्य था।

प्रज्ञा समवसरण में आयोजित कार्यक्रम में महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'फलसूण्ड प्रवेश पर बड़ी संख्या में लोग सामने आए। ऐसा लगा मानो श्रद्धा-भक्ति का सागर लहरा रहा हो। कितना उल्लास दिखाई दे रहा है। लग रहा है जैसे धर्म-संप्रदाय का कोई भेद नहीं है। इस अवसर पर यही कहना है कि सभी आचार्यप्रवर के इस प्रवास का पूरा लाभ उठाएं। गुरु अंधकार को दूर कर पथ को प्रकाशित करते हैं। गुरु की शिक्षा को धारण कर मन की सफाई करें, नशामुक्त बनें और धर्म से जीवन की दशा और दिशा को बदलें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'अनेक अर्थों में प्रयुक्त 'दर्शन' शब्द श्रद्धा को व्यक्त करने वाला भी है। दर्शन सम्यक्, मिथ्या और मिश्र--तीनों प्रकार का होता है। मिथ्या दर्शन वाला प्राणी अभागा है, जबकि सम्यक् दर्शन वाला प्राणी भाग्यवान है। यथार्थ श्रद्धा का होना सम्यक् दर्शन है। सच्चाई के प्रति श्रद्धा घनीभूत हो। अध्यात्म का सारपूर्ण तत्त्व है--वीतरागता। अहिंसा आदि व्रत इसकी शाखाएं हैं।' पूज्य आचार्यवर ने अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की विस्तार से चर्चा की और कहा--'दूसरों का जो व्यवहार स्वयं को प्रतिकूल लगे, वह व्यवहार अन्य के साथ नहीं करना चाहिए। दूसरों के कल्याण में योगभूत बनें और दुर्गणों को छोड़कर सद्गुणों का विकास करें।'

फलसूण्ड में जन्मे मुनि महावीरकुमारजी ने अपनी भावाभिव्यक्ति के साथ भावपूर्ण गीत प्रस्तुत किया। मुनि महावीरकुमारजी के संदर्भ में आचार्यवर ने कहा--'फलसूण्ड गांव का यह अवदान है कि महावीर जैसे

अच्छे बालक को हमारे धर्मसंघ को सौंपा है। ये एक बच्चे के रूप में आए और अब युवा हो गए। बचपन में ये एक सुशील बालक के रूप में रहे। कई बालकों में चंचलता ज्यादा देखने को मिलती है। जहां तक मेरी स्मृति है, महावीर में वह देखने को नहीं मिली। अभी यह जैसा है, जीवन भर वैसा रह गया तो समझें महावीर का बेड़ा पार है। यह अध्ययनशील, प्रतिभाशाली और विनीत साधु है। सप्तवर्षीय पाठ्यक्रम में अध्ययनरत साधु-साध्वियों के बीच में सर्वाधिक अंक पाने वाला महावीर रहा। हो सकता है इतने अंक प्राप्त करने पर कोई यूनिवर्सिटी गोल्डमैडल देती हो। हमने इसे **'श्रेष्ठ श्रुताराधक'** के रूप में स्वीकारा। यह हमारी अच्छी सेवा करता है। हमारे सन्देश, पत्र आदि के व्यवस्थागत कार्य से भी जुड़ा हुआ है। यह मधुर गायक भी है। कोई अच्छा कार्यक्रम हो तो उसमें इससे मंगलाचरण कराया जा सकता है। हम अपने योग्य शिष्य मुनि महावीरकुमार के संसारपक्षीय गांव में सात्विक गौरव व पवित्र भावना के साथ आए हैं। यह सेवा, साधना में अपना खूब विकास करे।' आचार्यवर ने मुनि महावीरकुमारजी के संसारपक्षीय पिता **श्री सवाईचन्दजी कोचर** व माता **श्रीमती छगनीदेवी कोचर** का उल्लेख करते हुए कहा--'बालक की भिक्षा देना बड़ी सेवा है। इन्होंने अच्छे बालक को संघ को समर्पित किया है।' आचार्यवर ने कोचर दम्पति को क्रमशः **'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'** व **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

शासनश्री मुनि हर्षलालजी के साथ बाड़मेर चतुर्मास करने वाले मधुर संगायक मुनि राजकुमारजी ने आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने मधुर गीत के द्वारा गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। आचार्यवर ने मुनि राजकुमारजी को भक्त संत बताते हुए कहा--'ये अपने जीवन में अध्यात्म का खूब विकास करते रहें।'

कार्यक्रम में स्थानीय तेरापंथ कन्यामंडल, कोचर परिवार के भाइयों, खूशबू जैन, मंजु सालेचा आदि ने पृथक-पृथक गीत का संगान किया। स्थानीय सरपंच श्रीमती आनंदकंवर, उपासक श्री सुमेर कोचर, प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री जसराज तातेड़, तेयुप मंत्री श्री कमलेश कोचर, रुचिका कोचर, संतोष तातेड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संयम पुष्ट होता है चारित्र की आराधना से

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवन में कहा--'आत्मा को सीधे पकड़ना संभव नहीं है। इसके तीन कर्मचारी हैं--मन, वचन एवं काया। इन तीनों पर निग्रह कर लिया जाए तो आत्मदर्शन संभव है। निग्रह चारित्र के द्वारा होता है। चारित्र की आराधना से मन, वचन एवं काया का संयम स्वतः हो जाता है। यह चिंतनीय बात है कि जिसका आचरण सम्यक् नहीं है, उसका प्रभाव दूसरों पर कैसे पड़ेगा? गुरुदेव तुलसी ने महाव्रत जैसे बड़े व्रत स्वयं स्वीकार किए और जनसामान्य को अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम दिए। व्यक्ति की कथनी व करनी में समानता रहनी चाहिए, तभी वह दूसरों पर अपना प्रभाव छोड़ सकता है। वाणी एक ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने व्यवहार को विकृत भी कर सकता है और बिगड़े व्यवहार व कार्य को सुधार भी सकता है। व्यक्ति वाणी-विवेक का ध्यान रखे और चारित्र के द्वारा काया का संयम रखे। शरीर से किसी को कष्ट न दे और मन को भी पवित्र विचारों वाला बनाए। जीवन में ज्ञान का प्रकाश हो, अच्छे संस्कारों का विकास हो और संयम की चेतना प्रशस्त हो, इसमें मानव जीवन की सार्थकता है।'

मंत्री मुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'व्यक्ति धर्म की साधना के द्वारा स्वयं को परम बनाना चाहता है, भगवत्ता को पाना चाहता है। परम की प्राप्ति के लिए माया से विरत रहना होगा, आसक्ति से मुक्त रहना होगा। गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी व्यक्ति धर्माराधना कर सकता है। आचार्यवर द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने से परम को प्राप्त किया जा सकता है।'

पूज्य आचार्यप्रवर ने उपस्थित विद्यार्थियों को नशामुक्ति का संकल्प करवाया। जैसलमेर के पूर्व विधायक श्री श्यामसिंह भाटी ने अपने विचार रखे।

परिशोधन का सशक्त माध्यम है तपस्या

११ दिसम्बर। आज प्रातःकालीन कार्यक्रम में मंत्री मुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'जीवन के दो मार्ग हैं--भोग व त्याग। भोग का मार्ग देखने में अछा लगता है, भोग भोगने में भी अच्छा लगता है, पर उसके परिणाम घातक होते हैं। त्याग का पथ दीखने में कठोर अवश्य है, पर यह व्यक्ति को बंधनमुक्ति की ओर अग्रसर करता है। जीवन को सार्थक बनाना है तो भोग की चेतना से विरत होकर त्याग की राह पर चलें।'

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'तपस्या हमारी आत्मा के परिशोधन का सशक्त माध्यम है। साधु तपस्वी होते हैं, इसीलिए उनके लिए 'तपोधन' शब्द प्रयुक्त होता है। व्यक्ति मानसिक, वाचिक व कायिक तप करे, यह वांछनीय है। मानसिक तप के रूप में मन को एकाग्र कर परमात्मा का स्मरण करते हुए उसमें ध्यान लगा सकता है। व्यक्ति अनुप्रेक्षा का अभ्यास करे, मन में मैत्री व कल्याण की भावना रखे और मन को निर्विचार रखने का प्रयास करे।'

आचार्यवर ने आगे कहा--'परमात्मा की स्तुति करना, धर्मोपदेश देना, अहिंसात्मक व हितकर भाषा का प्रयोग करना भी तप है। उपवास, आतापना, शीत आदि को समत्व से सहन करना कायिक तप है। हमारी आत्मा इन तीनों तपों से भावित होती रहे। इससे हमारे आत्मकल्याण का पथ प्रशस्त हो सकता है।' कार्यक्रम में मुनि महावीरकुमारजी ने गीत का संगान किया। श्रीमती मंजु सालेचा ने गीत के माध्यम से भावाभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर का आज रात्रिकालीन प्रवास मुनि महावीरकुमारजी के संसारपक्षीय कोचर परिवार के आवास पर हुआ। परिवार के सदस्यों ने गीत व मुक्तक के माध्यम से अपनी भावना प्रकट की। आचार्यवर की इस अनुकंपा से पूरा परिवार प्रफुल्लित था। पूज्यप्रवर ने **श्री स्वरूपचन्द कोचर** को **'श्रद्धानिष्ठ श्रावक'** व **श्रीमती नारायणीदेवी कोचर** को **'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति'** संबोधन से संबोधित किया।

आचार्यप्रवर द्वारा नवीन घोषणाएं

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने ८ दिसम्बर को प्रातःकालीन कार्यक्रम में अपने मंगल प्रवचन के बाद अग्रांकित घोषणाएं की हैं--

- १७ जुलाई २०१३ को लाडनूं में चातुर्मासिक प्रवेश करने का भाव है।
- २८ नवम्बर २०१३, मृगशिर कृष्णा दशमी को **बीदासर में दीक्षा समारोह** करने का भाव है।
- सन् २०१४ की **होली** श्रीगंगानगर अंचल में, **महावीर जयंती** पंजाब में तथा **अक्षयतृतीया** हरियाणा में करने का भाव है।
- ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया, ३० मई २०१४ को गुरुदेव तुलसी की जन्मशताब्दी की भावना के साथ दिल्ली की सीमा में प्रवेश करने का भाव है।

परमपूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का बाव से लाडनूं तक का संभावित यात्रा पथ

१५ मई	थराद	२० मई	जडिया	२५ मई	कोडी
१६ मई	भोरडू	२१ मई	वासण	२६ मई	भीनमाल
१७ मई	राह	२२ मई	दहीपुर	२७ मई	कुशलापुरा
१८ मई	पावटासन	२३ मई	राणीवाड़ा	२८ मई	दासंपा
१९ मई	धानेरा	२४ मई	कोटड़ा	२९ मई	पोषाणा

३० मई	चोराऊ	१६ जून	मेघलासिया	३ जुलाई	भैरूनाड़ा
३१ मई	सायला	१७ जून	बड़ली हाइवे	४ जुलाई	खींवसर
१ जून	उम्मेदाबाद	१८ जून	लहरिया	५ जुलाई	राकला
२ जून	नीमराणा	१९ जून	अमरनगर (जोधपुर)	६ जुलाई	भाकरोद
३ जून	काठाडी	२० जून	सरदारपुरा (जोधपुर)	७ जुलाई	चिमरानी
४ जून	मोकलसर	२१ जून	जाटावास (जोधपुर)	८ जुलाई	नागोर
५ जून	राखी	२२-२३ जून	अमरनगर (जोधपुर)	९ जुलाई	कंवलीसर
६ जून	करमावास	२४ जून	पावटा महामंदिर	१० जुलाई	जोधियासी तितरी
७ जून	समदड़ी स्टेशन	२५ जून	मण्डोर	११ जुलाई	आंवलियासर
८ जून	लुहारों की ढाणी	२६ जून	टूढ़ की वाड़ी	१२ जुलाई	जोगलसर
९ जून	कल्याणपुरा	२७ जून	करबड़	१३ जुलाई	करेजड़ा
१० जून	बांकियावास	२८ जून	नैतड़ो	१४ जुलाई	गेड़ाफ
११ जून	मंडली	२९ जून	वावड़ी	१५ जुलाई	मालकसर
१२-१३ जून	कोरणा	३० जून	निम्बरिया	१६ जुलाई	सुनारी
१४ जून	आगोलाई	१ जुलाई	कजनाऊ	१७ जुलाई	लाडनूं
१५ जून	बम्बोर	२ जुलाई	सोयला		

नोट :- यात्रा पथ में अपेक्षानुसार परिवर्तन संभावित है।

स्मृति-संबल

- सरदारशहर निवासी पूना प्रवासी श्री लूणकरण सेठिया (सुपुत्र-स्व. आसकरणजी सेठिया) का निधन हो गया। पूज्य आचार्यप्रवर के परिवार में वे संसारपक्षीय बहनोई थे। साध्वी ज्ञानप्रभाजी के संसारपक्षीय अनुज व साध्वी सुषमाकुमारीजी के संसारपक्षीय मामा थे। श्री सेठिया धार्मिक अभिरुचि के आस्थाशील श्रावक थे।
- सरदारशहर निवासी श्री करणीदान सेठिया (सुपुत्र-स्व. चौथमलजी सेठिया) का छियासी वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे एक खोजी व प्रयोगधर्मा व्यक्ति थे। प्राच्य विद्याओं के प्रति उनकी गहरी अभिरुचि थी। वे अध्ययनशील, चिंतक व लेखक थे। उन्होंने मंत्रविद्या, तंत्रविद्या, पराविद्या आदि पर पुस्तकें लिखीं। वे संघनिष्ठ, गुरुनिष्ठ व धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण के कृपापात्र सेठियाजी के पुत्र-पुत्रियां अपने-अपने क्षेत्रों में समाज की विभिन्न संस्थाओं के पदों पर रहते हुए संघीय प्रवृत्तियों से जुड़े हुए हैं।
- टापरा निवासी श्रीमती सुन्दरदेवी पालगोता (धर्मपत्नी-स्व.मांगीलालजी पालगोता) का चौबीस घंटे के तिविहार व पैंतालीस मिनट के चौविहार अनशन में विजयदशमी के दिन स्वर्गवास हो गया। वे सहज, मिलनसार व पापभीरु श्राविका थीं। उन्होंने अपनी दो पुत्रियों--समणी अक्षयप्रज्ञाजी, समणी पावनप्रज्ञाजी व दोहित्री समणी प्रणवप्रज्ञाजी को संघ-समर्पित किया। साध्वी सहजप्रभाजी भी इसी परिवार से संबद्ध हैं। गुरु-निर्देश पर समणी अक्षयप्रज्ञाजी ने पालगोता परिवार के इस प्रथम संथारे का प्रत्याख्यान करवाया।
- थामला-राजसमन्द निवासी श्री मनोहरलाल सोनी का देहावसान हो गया। थामला का सोनी परिवार श्रद्धाशील व संघनिष्ठ परिवार है। मनोहरलालजी बड़े श्रद्धालु श्रावक थे। उनके मकान में साधु-साध्वियों के चतुर्मास व प्रवास होते रहे हैं।

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/12-14 Fri.-Sat.
Date of Publication : 15-12-2012 L.No.-U (C) 200/2012-2014
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

- चूरू निवासी कोलकाता प्रवासी श्री जीवराज कोठारी का एक घंटे के चौविहार संथारे में स्वर्गवास हो गया। पिछले अठारह महीनों से असाध्य बीमारी से पीड़ित होते हुए भी उनकी सहनशीलता, समता व धैर्य उल्लेखनीय था।
- बोरज निवासी श्रीमती कंचनदेवी गुंदेचा (धर्मपत्नी-स्व. लालचन्दजी गुंदेचा) का देहावसान हो गया। वे साध्वी कमलप्रभाजी की संसारपक्षीया भाभी थीं। साध्वी वरदांजी इसी परिवार से संबद्ध थीं। पूरे परिवार में धर्म के अच्छे संस्कार हैं।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

११,१११/- चि. भरत सह सौ. भाग्यश्री के शुभ विवाहोपलक्ष्य में उनके पिताश्री ओमप्रकाश, माता श्रीमती संतोषदेवी एवं बहन प्रियंका बोथरा, तारानगर-बेंगलुरु-सागर (कर्नाटक) द्वारा प्रदत्त।

३१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती कमलादेवी जैन (धर्मपत्नी-स्व. लाला राजकुमार जैन, हिसार) की १५वीं पुण्यतिथि (१६ दिसम्बर) पर उनकी सुपुत्री श्रीमती त्रिशला जैन (धर्मपत्नी-श्री अनिलकुमार जैन एडवोकेट) दौहित्र अखिल जैन एडवोकेट, हिसार, अमित जैन एडवोकेट, चण्डीगढ़ व संभव जैन द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती मोतीबाई डागलिया (धर्मपत्नी-स्व. उदयलालजी डागलिया) को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' तथा उनके सुपुत्र किशनजी डागलिया को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' व पुत्रवधू श्रीमती मीना डागलिया को 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में भेरूलाल-संगीता, रमेशलाल-रेखा, दिव्या, जिनल, ध्रुवी, कशिश, हर्षिता व सविता डागलिया, कोशीवाड़ा-मुम्बई द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्री प्रेमचन्द-रमलाबाई चोरड़िया (बड़ू-भुसावल) के दाम्पत्य जीवन की ५०वीं वर्षगांठ (स्वर्णजयंती) के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र इंदर, विनोद, सुपौत्र गौरव, कार्तिक, दर्शन व सुपौत्री धारा चोरड़िया द्वारा प्रदत्त।

२१००/- दर्शन-उपासना हेतु गुरुदेव के श्रीचरणों में पहुंचने के उपलक्ष्य में श्रीमती कमलाबाई चोरड़िया (धर्मपत्नी-डॉ. उत्तमचन्द चोरड़िया) लोणार (महाराष्ट्र) द्वारा प्रदत्त।

• विज्ञप्ति के जिन सदस्यों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण शीघ्र करवा लें। वार्षिक शुल्क २५०/- अथवा आजीवन शुल्क २१००/- हमारे दिल्ली कार्यालय अथवा शिविर कार्यालय में जमा कराएं। शुल्क अपने यहां आदर्श साहित्य संघ के एकाउण्ट नं.०१३३०००१००३६८३५६ (पंजाब नेशनल बैंक) में भी जमा करा सकते हैं।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता—

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पो. टापरा-३४४ ०२३ जि. बाड़मेर (राजस्थान) फोन : ९६८००५५३८१, ९३५२४०४६४१
दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१ Email : adarshsahityasangh@yahoo.com

●

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठौतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **केशवप्रसाद चतुर्वेदी।**